पक्षी, शिकारी और रामायण

सी. एन. सुब्रह्मण्यम

क्रौंञ्च पक्षी बगुला जैसा एक पक्षी है। सफेद रंग का। उसके बारे में एक बहुत पुरानी कहानी है।

"एक सुबह वाल्मीकि मुनि नहाने के लिए एक नदी किनारे पहुँचे। छाल के बने अपने कपड़े एक शिष्य को देकर वे नदी में उतरने ही वाले थे कि उनकी नज़र क्रौंञ्च पक्षियों के एक जोड़े पर पड़ी। पक्षी निडर होकर एक-दूसरे के साथ खेल रहे थे। पक्षियों को प्रेम करते देख वाल्मीकि के मन में भी शायद खुशी की लहर दौड़ पड़ी। तभी अचानक एक तीर हवा को चीरते हुए आया और जाकर नर पक्षी को लगा। तीर लगते ही वह क्रौंञ्च नर पक्षी गिर पड़ा। और मर गया। उसकी साथी मादा पक्षी चीखते हुए उसके पास मण्डराने लगी। मुनि से यह दृश्य देखा न गया। दुख व गुस्से से उनका मन बेकाबू हो गया। अनायास ही उनके मुँह से ये शब्द निकल पड़े:

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंञ्चमिथुनादेकमवधोः काममोहितम।।

(श्रीमद् वालिमीकि रामायणम्, बालकाण्डम्, दूसरा सर्ग, श्लोक 15)

हे निषाद, तुमने प्रेम करते दो क्रौंञ्चों में से एक को क्यों मार गिराया? तुम्हें कभी शाश्वत प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी।

अपने कहे इन शब्दों को सुनकर वे खुद भौंचक्के रह गए। यह मैंने क्या कह दिया! मैंने इतने लयबद्ध वाक्य की रचना कैसे कर ली जोकि एक सुन्दर व सरल छन्द बन गया है, जिसे गाया भी जा सकता है और जिसमें मेरे मन की भावना इस सरल तरीके से व्यक्त हो गई? उन्होंने अपने शिष्य से कहा:

शोकार्तेनास्य प्रवृत्तो मे श्लोको भवतु नान्यथा।
शोक में लिप्त मेरे द्वारा बना यह श्लोक ही है।

नहाकर अपने आश्रम पहुँचने के बाद भी वे इसी चिंता में लगे रहे कि उनसे यह कविता कैसे बन गई?

तभी ब्रह्म देव ने आकर वाल्मीकि से आग्रह किया कि आपके मुँह से अभी जैसी कविता निकली उसी छन्द में आप राम की कथा की रचना कीजिए। आपके मन में इस छन्द की उत्पत्ति इसी मकसद से हुई है। फिर वाल्मीकि हिम्मत बाँधकर रामायण की रचना शुरू करते हैं।"

चित्रः दिलीप चिंचालकर

संस्कृत साहित्य की परम्परा में वाल्मीकि को आदि कवि या पहला कवि माना जाता है। उनके मुँह से निकली "मा निषाद" कविता को पहली कविता माना जाता है। उससे शुरू हुई रामायण को पहला महाकाव्य मानते हैं। कविता के एक स्वरूप "श्लोक" का बाद के कवियों ने भरपूर उपयोग किया क्योंकि वह पढ़ने व याद करने के मामले में बहुत सरल था।

क्या वास्तव में ऐसी कोई घटना घटी थी? क्या यही पहला श्लोक है? क्या वाल्मीकि के पहले किसी ने कविता या श्लोक नहीं रचा था?... आदि-आदि। ऐसे कई सवाल मन में उठ सकते हैं। इतिहास में खोजने निकलें तो इनमें से अधिकांश मान्यताएँ निराधार निकलेंगी। लेकिन इन मान्यताओं का महत्व उनकी ऐतिहासिकता में नहीं है। बल्कि इस बात में है कि इस परम्परा में कविता किसे माना गया। उसका हमारे जीवन व संवेदनाओं से क्या सम्बन्ध देखा गया। साहित्य की रचना के स्रोत के रूप में किसे देखा गया। यह कहानी हमें इन बातों पर विचार करने पर मजबूर करती है।

एक सामान्य व्यक्ति अपने आसपास के दो पक्षियों को देखकर उनकी खुशी में खुद शामिल हो जाता है। और जब पक्षी की खुशी तीव्र दुख में बदल जाती है तो वह व्यक्ति भी उसे अनुभव करता है। दूसरों की खुशी व दुख का अनुभव – चाहे वे मनुष्य हों या पेड़-पौधे हों या जानवर – और किसी दूसरे द्वारा किए गए अन्याय पर दुखी होना... इन्हें काव्य रचना का आधार माना गया है। काव्य हमें अपने से बाहर निकलकर दूसरों तक पहुँचने तथा उनकी भावनाओं को समझने का माध्यम बन सकता है। दूसरों के दुख-दर्द को अपना दर्द बना सकता है। मुझे तो इस प्रसंग का यही महत्व समझ में आता है। शायद तुम्हें कुछ और सूझता हो! मैं अकसर सोचता हूँ कि उस शिकारी के मन में क्या विचार आए होंगे? यह भी तो सोचने की बात है। है ना!

तुम्हारे लिएः इस प्रसंग में दो पक्षियों के बिछुड़ने का दुख है। क्या तुम सोचकर बता सकते हो कि रामायण में किस-किस तरह के लोगों के बिछड़ने के दुखों का बयान है? समय मिले तो ज़रूर लिखकर भेजना।

चकमक

बूँदों के बुल्ले हैं
सब नप्पे-तुल्ले हैं
चार आने - आठ आने
बादल के खुल्ले हैं....

मिर्च के पौधे को मिर्ची लगी।

बारिश के आते ही
ज़मीन नरम हो जाएगी।
नरम ज़मीन पर बीज बोने से
पहले हल चलेगा।

दोनों फोटोः योगेश मालवीय